अमर उजाला

प्रवाह

नई दिल्ली । सोमवार, 8 अप्रैल 2019

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

कड़ी मेहनत, तैयारी और विफलता से सीख का नतीजा है सफलता...
- कॉलिन पॉवेल

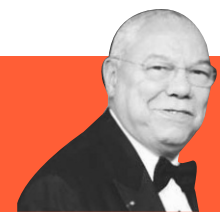

अमेरिका के पूर्व विदेश मंत्री

सिविल सेवा की परीक्षा में सफल हुए युवा हमारे देश की विविधता का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। उम्मीद करनी चाहिए कि परिश्रम और जज्बे के कारण शीर्ष नौकरशाही के लिए चुने गए ये युवा देश को आगे बढ़ाने में अपनी मौलिक सोच का परिचय देंगे।

मेधा और विविधता

हर बार की तरह इस बार भी सिविल सेवा के परिणाम ने हाल में उभरे कुछ निष्कर्षों को बरकरार रखा है, और भले यह किसी नई प्रवृत्ति की ओर संकेत नहीं करता, पर इसका कुल विश्लेषण विचारोत्तेजक जरूर है। मसलन, नौकरशाही के सर्वोच्च पदों के लिए हुई इस परीक्षा में विज्ञान की पृष्ठभूमि के छात्रों का वर्चस्व इस बार भी बरकरार रहा। सिविल सेवा के टॉपर कनिष्क कटारिया आईआईटी, बॉम्बे से बी.टेक. हैं, तो द्वितीय रहे अक्षत जैन आईआईटी, गुवाहाटी से इंजीनियरिंग में स्नातक हैं। ऐसे ही महिलाओं में पहला स्थान और कुल मिलाकर पांचवीं रैंकिंग हासिल करने वाली सृष्टि जयंत देशमुख ने राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल से केमिकल इंजीनियरिंग में बी. ई. किया है। ऐसा नहीं है कि ह्यूमैनिटीज या मानविकी के छात्रों के लिए इसमें पहले जैसी सफलता नहीं मिलती। पर पिछले कुछ वर्षों से विज्ञान के छात्र इसकी शीर्ष रैंकिंग में आने लगे हैं, जिससे एक अलग बहस शुरू हुई है। सिविल सेवा में दक्षिण यानी भूगोल का वर्चस्व तो टूट चुका है-हिंदी पट्टी के अभ्यर्थी अब शीर्ष रैंकिंग में होते हैं-सामाजिक वर्चस्व भी ध्वस्त हो चुका है। इस बार के टॉपर अनुसूचित जाति से हैं, तो शीर्ष 25 सफल प्रतिभागियों में 15 पुरुष और 10 महिलाएं हैं। इसमें सफल होने का कोई एक पैमाना पहले भी नहीं था, अब भी नहीं है। किसी ने लंबे समय तक अनुशासन के साथ पढ़ाई की, तो किसी ने कुछ घंटों तक पढ़ाई की। अलबत्ता इसमें ऑनलाइन पढ़ाई कर सफलता हासिल करने का सिलसिला जिस तरह बढ़ रहा है, वह जरूर ध्यान देने की मांग करता है। व्यावहारिक धरातल पर शीर्ष नौकरशाही की देश में आज चाहे जो भी स्थिति हो, पर इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि इसके प्रति अब भी समाज में पहले जैसा ही आकर्षण है। बल्कि यह आकर्षण ही कई बार सामान्य और असामान्य युवाओं को भी इसमें सफल होने के लिए प्रेरित करता है, जैसे कि इस बार भी महाराष्ट्र में पालघर के एक किसान के बेटे ने यह उपलब्धि हासिल की है, तो दिल्ली विश्वविद्यालय के एक दृष्टिबाधित प्रोफेसर ने इसमें सफलता पाई है। ऐसे और भी अनेक उदाहरण हैं। कामना करनी चाहिए कि परिश्रम और जज्बे के बूते देश की शीर्ष नौकरशाही के लिए चुने गए ये युवा कार्यक्षेत्र में भी मौलिकता और नवाचार का परिचय देते हुए देश को आगे ले जाने का काम करेंगे।

चुनाव और जंग में सब जायज

इस बार के लोकसभा चुनाव को भारत के चुनावी इतिहास में सबसे आक्रामक चुनाव अभियान के रूप में याद रखा जाएगा, जिसमें किसी तरह का कोई अंकुश नहीं है। उत्तर-आधुनिक युग में प्यार और चुनाव में सब कुछ जायज है! महाभारत के अर्जुन की तरह राजनेताओं का एक ही लक्ष्य है-चुनाव में जीत। चुनावी अर्जुन जीतने के लिए साम, दाम, दंड, भेद का इस्तेमाल कर रहे हैं। गांधी की धरती पर गांधी को ही अप्रासंगिक कर दिया गया है। उम्मीदवारों के लिए सत्य ईश्वर का पर्याय नहीं है, यह परिवर्तनशील है! सत्य वही है, जो हम कहते हैं, बाकी सब झूठ है, विरोधियों का छल-कपट है, सफेद झूठ है! गांधी को छोड़ विभिन्न विचारधाराओं के हमारे राजनेताओं ने चीनी दिग्गज देंग श्याओ पिंग को गले लगा लिया है, जिनकी यह उक्ति बेहद लोकप्रिय है कि जब तक बिल्ली चूहे पकड़ती रहती है, तब तक इसका कोई मतलब नहीं कि वह सफेद है या काली!

माना यह जाता है कि प्रतिस्पर्धा उत्कृष्टता की ओर ले जाती है। पर जब प्रतिस्पर्धा झूठ बोलने, झूठ का प्रचार करने, निराधार अफवाहें फैलाने और चरित्र हनन की हो, तो क्या उससे उत्कृष्टता बढ़ती है? प्रतिस्पर्धी राजनीति में विनम्रता की जगह नहीं है, हर कोई अपने किए का ढिंढोरा पीटता है और दूसरों के किए का भी श्रेय लेता है। मुद्दों का हल होगा या नहीं, यह बाद की बात है, जनता को यह भी याद नहीं रहता कि क्या वादा किया गया था। सबसे अहम है एक विश्वसनीय कहानी गढ़ना, जिस पर भरोसा किया जा सके। चुनावी नतीजों ने अक्सर साबित किया है कि जमीनी स्तर के कठोर यथार्थ के बजाय लहर पैदा करने में धारणाएं अधिक महत्वपूर्ण होती हैं। इस

आज की प्रतिस्पर्धी राजनीति में विनम्रता की जगह नहीं है, हर कोई अपने किए का ढिंढोरा पीटता है और दूसरों के किए का भी श्रेय लेता है। हम क्यों नहीं स्वीकारते कि राष्ट्र निर्माण एक सतत प्रक्रिया है, जो लगातार चल रही है?

सुरेंद्र कुमार, पूर्व राजदूत

रणनीति का पहला हथियार है अपने विरोधियों को बुरा और खतरनाक बताना, अतीत में या वर्तमान में देश में जो कुछ भी गलत हुआ है, उसका दोष अपने विरोधियों पर मढ़ना और खुद को ईश्वर के भेजे दूत के रूप में पेश करना, जो सभी गड़बड़ियां ठीक करेगा और एक सुरक्षित, मजबूत, आत्मविश्वास से भरे, सुखी और वैश्विक स्तर पर सम्मानित नए भारत का निर्माण करेगा।

आज सारा दोष नेहरू को दिया जाता है। उन्होंने जो भी किया, वह गलत था! अगर वह देश के पहले प्रधानमंत्री नहीं होते, तो भारत कितना महान बन जाता! मैं जो करता हूं, वह सही है और आप जो करते हैं, वह गलत है! यदि लोगों ने आपको वोट देकर जिताया, तो आप देश को आपदा में धकेल देंगे, जबकि मेरे हाथ में देश सुरक्षित है। विकास का एजेंडा कहां है? क्या चुनावी बॉन्ड ने चुनावी चंदे में अस्पष्टता को शुरू नहीं किया है? क्या अब भी जाति महत्वपूर्ण नहीं है? मोदी का 'किसान सम्मान' या राहुल का 'न्याय' क्या है?

चुनाव प्रचार भारतीय प्रतिभाओं को आकर्षक नारे और मजाक उड़ाने वाले नए शब्द गढ़ने के लिए प्रेरित करता है। एनडीए सरकार के समर्थकों ने नियंत्रण रेखा के पार बालाकोट में सर्जिकल स्ट्राइक और शक्ति मिशन के जरिये मजबूत राष्ट्रवाद को हवा दी है। वे सरकार को लाखों रोजगार पैदा करने और सामाजिक व आर्थिक समावेशन के लिए सैकड़ों नवीन योजनाओं की शुरुआत कर निम्न आय वर्ग के करोड़ों लोगों को मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था में लाने का श्रेय देते हैं। जबकि विरोधी उस पर सशस्त्र बल और वैज्ञानिकों की सफलता का राजनीतिकरण कर चुनावी लाभ लेने का आरोप लगाते हैं। विरोधियों ने किसानों का संकट, बेरोजगारी, अर्थव्यवस्था व घरेलू निवेश में सुस्ती, नोटबंदी और जीएसटी के खराब क्रियान्वयन के जरिये अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाने, अपने लोगों को फलने-फूलने देने वाले पूंजीवाद को बढ़ावा देने, आर्थिक अपराधियों को देश से भगाने, संस्थानों में पसंदीदा लोग भरने, विभाजनकारी नीति और नफरत को बढ़ावा देने, अभिव्यक्ति की आजादी पर हमला करने, अपने सारे बड़े वादों को चुनावी जुमला कहकर खारिज करने का भी सरकार पर आरोप लगाया है। वे प्रधानमंत्री मोदी पर यह भी आरोप लगाते हैं कि वह गंभीर मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय नाटकबाजी में लिप्त हैं।

मोदी के समर्थक कहते हैं कि उनकी सरकार ने 55 महीने में जो कर दिखाया, वह कांग्रेस 55 वर्ष में नहीं कर सकी। चुनावी रैलियों में मोदी खुद को चौकीदार बताते हैं, जो धरती के साथ-साथ समुद्र और अंतरिक्ष में भारत की रक्षा करेंगे। वह मतदाताओं को मिलावटी गठबंधन और 'सराब' के नेताओं से बचने की सलाह देते हैं, जिनके पास सिर्फ एक लक्ष्य-'मोदी हटाओ' के अलावा और कुछ नहीं है, जबकि वह देश बचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

न रोम एक दिन में बना था, न ही भारत! इसे बनाने में वर्षों तक लाखों लोगों ने खून-पसीना बहाया है। सभी नेताओं ने अपने कार्यकाल में अपने-अपने तरीके से राष्ट्र निर्माण की पूरी कोशिश की। अगर इंदिरा गांधी के समय 1974 में परमाणु परीक्षण नहीं होता, तो अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में 1998 में परमाणु परीक्षण नहीं होता। और इन परीक्षणों के बिना जॉर्ज बुश और डॉ. मनमोहन सिंह के बीच असैन्य परमाणु समझौता नहीं हुआ होता। कांग्रेस सरकार द्वारा 1991 में पेश किए गए आर्थिक सुधारों ने भारत के आर्थिक पुनरुत्थान की प्रक्रिया को गति दी; वर्ष 2006-2007 में हमारी विकास दर 9.6 फीसदी थी। कांग्रेस के काम और योगदान के बिना परमाणु रिएक्टर, डीआरडीओ, इसरो, चंद्रयान, सूचना का अधिकार, आधार और मनरेगा की कामना नहीं की जा सकती थी। इसी तरह जीएसटी, बैंकिंग ऐंड इन्सॉल्वेंसी ऐक्ट, व्यापार सुगमता की सूची में भारत की छलांग, स्वच्छ भारत, जन धन, सौभाग्य, उज्ज्वला और दर्जनों अन्य समावेशी योजनाएं प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में शुरू हुईं। यहां तक कि मनरेगा और आधार ज्यादा कुशलता के साथ चल रहे हैं। 2013 की तरह दिल्ली की सड़कों पर भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन क्यों नहीं हो रहे?

इसलिए जैसे यह कहना बेईमानी है कि कांग्रेस सरकारों के समय कुछ नहीं हुआ, वैसे ही यह कहना भी गलत होगा कि मोदी के शासन में कुछ नहीं हुआ। यह सही नहीं है! हम यह क्यों नहीं स्वीकार करते कि राष्ट्र निर्माण एक सतत प्रक्रिया है, जो लगातार चल रही है। दूसरे को बुरा बताने के बजाय उनके योगदान को स्वीकार करने में क्या समस्या है?

अंतर्ध्वनि

>> अमृतलाल नागर

साहित्य को कमाई का साधन नहीं बनाना चाहिए

अपने बचपन और नौजवानी के दिनों का मानसिक वातावरण देखकर यह तो कह सकता हूं कि अमुक-अमुक परिस्थितियों ने मुझे लेखक बना दिया, परंतु यह अब भी नहीं कह सकता कि मैं लेखक ही क्यों बना। हमारे घर में सरस्वती और गृहलक्ष्मी नामक दो मासिक पत्रिकाएं नियमित रूप से आती थीं। हिंदी रंगमंच के उन्नायक राष्ट्रीय कवि पं. माधव शुक्ल लखनऊ आने पर मेरे ही घर पर ठहरते थे। मुझे उनका बड़ा स्नेह प्राप्त हुआ। आचार्य श्यामसुंदरदास उन दिनों स्थानीय कालीचरण हाई स्कूल के हेडमास्टर थे। उनका एक चित्र मेरे मन में आज तक स्पष्ट है- सुबह-सुबह नीम की दातुन चबाते हुए मेरे घर पर आना। वहीं हाथ-मुंह धोते फिर चांदी के वर्क में लिपटे हुए आंवले आते, दुग्धपान होता। उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि पं. बृजनारायण चकबस्त के दर्शन भी मैंने अपने यहां ही तीन-चार बार पाए। 1929 में निराला जी से परिचय हुआ, जो दिनोंदिन घनिष्ठतम होता ही चला गया। निराला जी के व्यक्तित्व ने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया। यदा-कदा दुलारेलालजी भार्गव के सुधा कार्यालय में भी जाया-आया करता था। रावराजा पंडित श्यामबिहारी मिश्र का एक उपदेश भी उन दिनों मेरे मन में घर कर गया था। उन्होंने कहा था, साहित्य को टके कमाने का साधन कभी नहीं बनाना चाहिए। चूंकि मैं खाते-पीते खुशहाल घर का लड़का था, इसलिए इस सिद्धांत ने मेरे मन पर बड़ी छाप छोड़ी। इस तरह सन 29-30 तक मेरे मन में यह बात एकदम स्पष्ट हो चुकी थी कि मैं लेखक ही बनूंगा। काशी में उन दिनों अनेक महान साहित्यिक रहा करते थे। शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के दर्शन पाकर मैं स्फूर्ति से भर जाता था। शरत बाबू हिंदी मजे की बोल लेते थे। मुझसे कहने लगे, पहले यह निश्चय करो कि तुम आजन्म लेखक ही बने रहोगे। मैंने सोत्साह हामी भरी।

-दिवंगत हिंदी लेखक

मंजिलें और भी हैं

>> डॉ. चित्तरंजन जेना

हैजे से हुई मौतों ने मुझे बदलाव के लिए प्रेरित किया

मैं एक डॉक्टर हूं और शुरू से ही अपने क्षेत्र के गरीब आदिवासी मरीजों के हित में काम करना मेरा लक्ष्य रहा है। दरअसल ओडिशा के कोरापुट और आसपास के इलाकों में भयावह गरीबी और इसी कारण छोटी-मोटी बीमारियों में लोगों को मैंने मरते हुए देखा है। इसी कारण बचपन में ही मैंने डॉक्टर बनने के बारे में सोचा था। वर्ष 2007 में कोरापुट जिले के दसमंतपुर ब्लॉक में हैजे के कारण हुई कई आदिवासियों की मौत ने मुझे स्तब्ध कर दिया था। अगर मैं वहां होता, तो उन गरीबों की जान बचाने की पूरी कोशिश करता। वर्ष 2016 में मैं कोरापुट जिले में मेडिकल ऑफिसर बनकर आया, और तभी से मैंने इस पूरे जिले में, जिसे देश के सबसे निर्धनतम इलाकों में से माना जाता है, आदिवासियों के हित में काम करना शुरू किया। सबसे पहले मैंने अपनी तरह की सोच रखने वाले कुछ साथी डॉक्टरों के साथ मिलकर 'गांवकु चला कमेटी' का गठन किया। इस कमेटी में डॉक्टरों के अलावा वॉलंटियर्स भी होते हैं। कमेटी को कई अलग-अलग टीम में बांट दिया गया है। हर टीम में एक डॉक्टर और कुछ वॉलंटियर्स होते हैं। हमारी कमेटी ने जिले के आठ ऐसे गांव चिह्नित किए हैं, जहां साप्ताहिक दौरा अनिवार्य है।

हमारी पहल से आदिवासियों में चेतना आई है, उनकी शिकायतों की अनदेखी अब संभव नहीं है।

हमारी कमेटी मे वॉलंटियर्स के नाम पर प्रशिक्षित युवाओं की टीम है। हर टीम हर सप्ताह जिले के अलग-अलग इलाकों में पैदल ही कई किलोमीटर घूमती है और लोगों के स्वास्थ्य की नियमित जांच करने के अलावा उन्हें जरूरी दवाएं भी दी जाती हैं। अपने इस साप्ताहिक दौरे में हम लोगों को साफ-सफाई के बारे भी जागरूक करते हैं। चूंकि ग्रामीण इलाकों में ज्यादातर बीमारियां दूषित पेयजल से होती हैं, ऐसे में, मैं उन्हें बताता हूं कि नदी या तालाब का पानी पीने से पहले उसे उबाल लेना जरूरी है। हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की आपूर्ति के मामले में अब पहले जैसी स्थिति नहीं है, इसके बावजूद लोगों को जागरूक करना आवश्यक है, क्योंकि जागरूकता के अभाव में ही बीमारियां होती हैं। ऐसे ही कुछ खाने से पहले हाथ धोने और महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान पूरी साफ-सफाई बरतने आदि के बारे में हम बताते हैं। मलेरिया से बचने के लिए लोगों को मच्छरदानी का नियमित इस्तेमाल करने, गांव और घर के आसपास कहीं भी पानी इकट्ठा न होने देने और माताओं को पहले छह महीने तक बच्चे को स्तनपान कराने की सलाह हम देते हैं। कई बार जरूरत पड़ने पर वॉलंटियर्स भी साफ-सफाई का काम करते हैं। साफ-सफाई के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए हमने स्वास्थ्य सहायक वाहिनी का भी गठन किया है, जिसमें स्थानीय लोग ही होते हैं। इसका काम लोगों को सजग करना तो है ही, इसके अलावा यह संस्था किसी तरह की समस्या या अव्यवस्था की स्थिति में स्थानीय अधिकारियों को इसकी सूचना देती है। चूंकि पिछले करीब दो-ढाई साल में हमारी पहल से आदिवासियों में चेतना आई है, इसलिए उनकी तरफ से मिलने वाली शिकायतों की प्रशासनिक स्तर पर अनदेखी करना भी अब पहले की तरह संभव नहीं है। पहले की तुलना में इन गांवों में आए बदलाव को अब साफ-साफ देखा जा सकता है। लोग पहले की तुलना में स्वस्थ रहने लगे हैं। अगर कोरापुट जैसी पहल देश के दूसरे पिछड़े इलाकों में भी की जाए, तो उसका जमीनी स्तर पर बहुत फायदा मिलेगा।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

फिर से गरीबी हटाओ

राहुल गांधी के हाल के भाषणों पर आपने ध्यान दिया हो, तो आपको इनमें सामंतवाद की झलक दिखी होगी। ध्यान दीजिए, किस तरह उन्होंने न्यूनतम आय योजना भारत के गरीबों को देने की बातें की हैं। सामंतवाद दशकों से कांग्रेस की परंपरा में रहा है।

इस सप्ताह जब लोकसभा चुनाव के लिए मतदान की प्रक्रिया शुरू होगी, तब वह मुद्दा शायद मुद्दा भी नहीं होगा, जो मेरी राय में सबसे बड़ा मुद्दा होना चाहिए। यह मुद्दा है सामंतवाद, जो दशकों से कांग्रेस की परंपरा में रहा है। सामंतवाद को बेशक समाजवाद का चोला पहनाया गया है, लेकिन राहुल गांधी के हाल में दिए भाषणों पर आपने थोड़ा ध्यान दिया हो, तो आपको इनमें सामंतवाद की झलक दिखी होगी। ध्यान दीजिए, किस तरह उन्होंने न्यूनतम आय योजना भारत के गरीबों को देने की बातें की हैं।

कांग्रेस अध्यक्ष ने अपनी इस नई गरीबी हटाओ योजना का जिक्र ऐसे किया, जैसे हर वर्ष गरीबों को 72,000 रुपये अपनी जेब से निकाल कर देने वाले हैं। यह पैसा इस देश के करदाताओं का है, लेकिन इसको हम चूंकि 'सरकारी' पैसा कहते हैं, इसलिए अक्सर भूल जाते हैं कि यह पैसा किसका है। जनता भी यह भूल जाती है, क्योंकि वह सदियों से गरीब, अशिक्षित रही है।

सो उसको दिखता नहीं है कि जिस तरह राजा-महाराजा अकाल या किसी अन्य संकट के समय अपनी तिजोरियां खोलकर इस बहाने नए महल बनवाया करते थे कि वह अकाल के समय किसानों को रोज़गार देने का अच्छा साधन होता था, वैसे ही आज के लोकतांत्रिक दौर में कांग्रेस के नेता सत्ता में रहने (या लौटने) के लिए गरीबों को लुभाने के वास्ते काल्पनिक तिजोरियां खोलते हैं।

कांग्रेस के सामंतवादी चरित्र का एक उदाहरण यह भी है कि इस दल के समर्थक यह कहते आए

तवलीन सिंह

हैं कि उनका 'ब्रह्मास्त्र' प्रियंका गांधी हैं। सो नरेंद्र मोदी को हराने के लिए कांग्रेस अध्यक्ष ने परिवारवाद का यह ब्रह्मास्त्र निकाला है।

लेकिन हम पत्रकार चूंकि कांग्रेस के 'सेक्यूलर' चरित्र को भाजपा के 'सांप्रदायिक' चरित्र से ज्यादा पसंद करते हैं, ऐसे में बहुत कम पंडित हैं, जिन्होंने कांग्रेस को सामंतवादी कहा है। कांग्रेस के मौजूदा सांसदों में से हर दूसरा सांसद किसी राजनेता का वारिस है, लेकिन सेक्यूलरिज्म के बहाने हम इस पर भी ध्यान आकर्षित करने से कतराते हैं।

भारत को शर्मिंदा होना चाहिए कि स्वतंत्रता के लगभग सत्तर वर्षों में से पचपन वर्ष हम पर एक ही परिवार ने राज किया है। भारत को शर्मिंदा होना चाहिए कि इस चुनाव में विपक्ष की पैरवी न सिर्फ वही परिवार, बल्कि ऐसा गठबंधन कर रहा है, जिसमें ऐसे राजनीतिक दल बंधे हुए हैं, जो पूरी तरह सामंतवादी हैं। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक इस महागठबंधन में तकरीबन जितने दल हैं, सब विरासत में मिले हैं किसी वारिस को। यह सामंतवाद नहीं है, तो क्या है?

चुनावी दौरों पर मैं पिछले दिनों जब भी निकली हूं, गांवों और कस्बों में अधिकतर लोग मुझे ऐसे मिले हैं, जो खुलकर कहते हैं कि उनको नरेंद्र मोदी पसंद हैं, क्योंकि वह देश के लिए काम कर रहे हैं, अपने परिवार के लिए नहीं। सर्वेक्षण भी बताते हैं कि अधिकतर भारतवासी चाहते हैं कि मोदी दोबारा प्रधानमंत्री बनें।

मोदी की गलतियां हमको दिखती हैं बहुत सारी, सो हम उन्हें गिनाते रहते हैं बिना उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि को देखे। मेरी नजरों में उनकी सबसे बड़ी देन यही है कि पिछले पांच वर्षों के कार्यकाल में उनके परिवार का एक भी सदस्य सत्ता के मजे लूटने के लिए सामने नहीं आया है। आज भी उनकी वृद्ध माताजी उसी छोटे-से घर में रहती हैं, जहां पहले रहती थीं। प्रधानमंत्री निवास में जब वह आती हैं, तो मेहमान बनकर। असली लोकतांत्रिक देशों में ऐसा ही होता है।

हरियाली और रास्ता

अंश, निबंध और सपना

अंश की कहानी, जिसने टीचर को बताया कि उसे बड़े सपने देखने से वंचित नहीं किया जा सकता।

अंश रोज स्कूल से छुट्टी के बाद पैसे कमाने के लिए एक अस्तबल में घोड़ों की सफाई करता था, और रात में एक ढाबे पर वेटर की नौकरी करता था। एक बार उसकी क्लास टीचर ने सभी बच्चों को 'मेरा सपना' विषय पर निबंध लिखने को कहा। उसने लिखा कि वह 200 एकड़ में घोड़ों का एक फार्म बनाना चाहता है, जिसमें उसका अपना एक घर होगा, और 50 घोड़े होंगे। यह निबंध लिखने के लिए उसने बहुत मेहनत की थी। उसे उम्मीद थी कि उसका निबंध क्लास में सबसे अलग होगा। पर दो दिन बाद अंश को पता चला कि टीचर ने उसे फेल कर दिया था। थोड़ी देर रोने के बाद वह टीचर के पास फेल करने की वजह पूछने गया। टीचर ने कहा, 'तुम एक गरीब परिवार से आए हो, रात की रोटी का ठिकाना नहीं होता, दो-दो नौकरी करने के बाद भी अगले महीने की स्कूल की फीस जमा कर पाओगे या नहीं, यह तुम्हें पता नहीं। तुम कैसे घोड़ों के इतने बड़े फार्म के बारे में सोच सकते हो? मैं तुम्हें एक और मौका देती हूं। कल फिर से अपना निबंध लिखकर लाना। पर इस बार कुछ ऐसा लिखना, जो तुम सच में हासिल कर पाओ। ऐसे सपने नहीं देखने चाहिए, जिन्हें हासिल न कर सकें।' अंश उस दिन काम पर नहीं जा सका। उसके पिता ने उसे समझाया, 'बेटा, तुम्हारे सपने सिर्फ तुम्हारे हैं। किसी को तुम्हारे सपनों को तय करने का कोई हक नहीं। अपने अंदर सपनों को साकार करने का माद्दा होना चाहिए।' अगले दिन अंश फिर वही निबंध लेकर टीचर के पास जाकर बोला, 'आपने जो अंक दिए, वह मुझे मंजूर है, पर अपने सपने से समझौता करना मुझे मंजूर नहीं। सपने अमीरी-गरीबी के आधार पर नहीं देखे जाते। जो अपनी काबिलियत से समझौता कर लेगा, वह अपने सपने साकार नहीं कर सकेगा।

कोई दूसरा कभी यह तय नहीं कर सकता कि हमारी काबिलियत क्या है।

खुली खिड़की

जिन्हें सर्वाधिक पसंद है चॉकलेट

भले ही वैश्विक चॉकलेट उपभोग में अमेरिका की हिस्सेदारी 18 फीसदी है, लेकिन प्रति व्यक्ति वार्षिक खपत सबसे ज्यादा स्विट्जरलैंड में है।

विजय का आशीर्वाद

सत्संग

लंका में रावण के साथ श्रीराम के युद्ध के कई दिन बीत चुके थे। एक दिन ब्रह्मा जी ने श्रीराम को कहा कि देवी चंडी का पूजन कर उन्हें प्रसन्न कीजिए, इस युद्ध में आपको विजय निश्चय ही मिलेगी। इसके अनुसार, चंडी पूजन और हवन के लिए दुर्लभ नील कमल के एक सौ आठ फूलों की व्यवस्था की गई। जब रावण को यह बात चली, तो उसने भी अमर होने के लिए देवी चंडी का पाठ शुरू कर दिया। यह जानकारी इंद्र देव ने पवन देव के माध्यम से भगवान श्रीराम को भिजवाई और साथ में यह परामर्श भी दिया कि रावण द्वारा किया जा रहा चंडी पाठ संपन्न हो जाने दिया जाए। लेकिन रावण भी तो मायावी था। उसने माया के बल से नील कमल का एक फूल गायब करवा दिया।

इधर श्रीराम देवी चंडी की पूजा करने के लिए बैठे। लेकिन देवी को चढ़ाने के लिए जब वह पुष्प देने लगे, तो पाया कि एक कमल कम है। इससे उनका संकल्प टूटता-सा दिखाई पड़ा। तत्काल कमल के एक और फूल की व्यवस्था करना असंभव था और इसके बिना देवी नाराज हो सकती थीं। सहसा उन्हें याद आया कि मां उन्हें राजीव लोचन कहती थीं, इसलिए उन्होंने तीर से तत्काल अपनी एक आंख निकालकर देवी को समर्पित करने का निश्चय किया। वह ऐसा करने जा ही रहे थे कि देवी चंडी प्रकट हुईं और उनका हाथ पकड़ते हुए कहा, मैं तुमसे प्रसन्न हूं। उन्होंने श्रीराम को विजयश्री का आशीर्वाद भी दिया।

-संकलित